प्रस्तावना

किसी भी देश का उच्चतम विकास उस देश की शिक्षा प्रणाली पर आधारित होता है | शिक्षा श्रेष्ठ नागरिकों का निर्माण करती है और वे नागरिक ही देश का भविष्य है | शिक्षा केवल साक्षरता नहीं अपितु व्यक्ति के आंतरिक गुणों का प्रकटीकरण भी है उसके व्यक्तित्व का पूर्ण विकास है और परिस्थितियों के साथ समायोजन करने की क्षमता है |

भाषा समाज को देखने का एक माध्यम है। मनुष्य भाषा के व्दारा ही समाज को देखता हैं। एक व्यक्ति का समाज में क्या स्थान है, यह उस व्यक्ति की भाषा से भी निश्चित होता है। अर्थात व्यक्ति की पहचान उसकी भाषा से ही होती है। भाषा मनुष्य को एक भाषाई समुदाय से जोडने का काम करती है, इसलिए मनोगत भाव प्रकट करने का सर्वोत्कृष्ट साधन भाषा है।

'मराठी' महाराष्ट्र राज्य की प्रमुख भाषा है। महाराष्ट्र सरकार ने भारत सरकार की भाषा नीति के अनुसार राष्ट्रीय स्तर पर भारतीय नागरिक को कम से कम तीन भाषाओं से अच्छी तरह परिचित होने या करने के अनुकूल भाषा-शिक्षण की योजना बनाई है|

इस उद्देश की पूर्ति में ही त्रि-भाषा सूत्र का कार्यान्वय हो रहा है| इसी भाषा के रूप में हिंदी को प्रयोजनमूलक बनाने का उद्देश भी प्रबल रहा है| सरकार के शिक्षा विभाग द्वारा स्वीकृत हिंदी प्रथम भाषा तथा द्वितीय भाषा के पाठ्यक्रम के आधार पर

महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिति का अभ्यासक्रम संशोधन द्वारा क्रमश: पहली से आठवीं कक्षा और पाँचवीं से आठवीं कक्षा तक की हिंदी भाषा की पाठ्यपुस्तकें तैयार करती है|

महाराष्ट्र के माध्यमिक विद्यालयों में हिंदी शिक्षण महाराष्ट्र राज्य मध्यमिक व उच्चमाध्यमिक शिक्षण मंडल, पुणे से संलग्न विद्यालयों में हिंदी का शिक्षण कक्षा पाँचवी से कक्षा दसवी तक अनिवार्य विषय के रूप में पढ़ाया जाता है|

हिंदी भाषा सीखने का प्रयोजन यही है कि बालक मौखिक एवं लिखित रूपों में उस भाषा में विचार-विमर्श कर सकते हैं|

महाराष्ट्र राज्य में प्रथम भाषा के रूप में 'मराठी' सिखाई जाती है| तथा द्वितीय भाषा के रूप में हिंदी शिक्षण दिया जाता है|

लघु शोध-प्रबंधं कार्य के लिए छठी कक्षा को चुना गया ।

यह शोध पठन और लेखन समस्याओं को लेकर किया गया है। पठन और लेखन की समस्याओं को दिखाने के लिए मैंने शब्दों को ही लिया है, इसलिए यह शोध केवल शब्द स्तरपर आधारित हैं। क्योंकी भाषा की स्वतंत्र और अर्थवान इकाई 'शब्द' है। ये इकाइयाँ एक से अधिक ध्वनियों या अक्षरों के योग से बनती है। ध्वनियों या अक्षरों के व्यवस्थित समुह को 'शब्द' कहते हैं जिससे अर्थ का बोध होता है। भाषा में शब्द ही महत्वपूर्ण है। शब्द से पद, पदबंध, उपवाक्य, वाक्य आदि बनते है। शब्द ही भाषा को जिवंतता प्रदान करते है।

मराठी भाषी विद्यार्थि जब व्दितीय भाषा के रूप में हिंदी को सिखते है, तो वह अल्पप्राण, महाप्राण, अनुस्वार एवं अनुनासिक(चन्द्रबिन्दु) के स्थान पर अनुस्वार का प्रयोग करते है| ह्स्व तथा दीर्घ का अशुध्द उच्चारण करते है। मात्रा इ. गलत लिखते है तथा उनका उच्चारण ठीक से नहीं कर पाते।

जैसे- मातृभाषा और व्दितीय भाषा की मिलती जुलती ध्वनियाँ-

हिंदी शिक्षण के रूप में उच्चारण की निम्नलिखित त्रुटियाँ इस प्रकार है-

1) 'ऋ' हिंदी में 'री' तथा मराठी में 'रू' उच्चारण होता है। इस कारण उच्चारण में त्रुटियाँ होती है। जैसे- 'कृष्ण' शब्द का उच्चारण हिंदी में क्रिष्ण' होता है, और मराठी में इस शब्द का उच्चारण 'कृष्ण' के रूप में होता है।

2) हिंदी में 'ज्ञ' शब्द का उच्चारण 'ग्य' होता है और मराठी में इसका उच्चारण 'न्य' के समान (ज+ञ) होता है।

3) प्रधान रूप से मराठी में 'ळ' ध्वनि है और हिंदी वर्णमाला में नही हैं। इसके लिए 'ल' का उच्चारण करते है।

जैसे- बाल(हिंदी),बाळ(मराठी) इसमें सही उच्चारण के बिना अर्थ भिन्नता होती है और उच्चारण दोषपूर्ण होता है। और वह बहुत से शब्द लिखने में गलतियाँ करते है उन्हें अनेक समस्याएँ उत्पन्न होती है।

इसलिए पढ़ना और लिखना में कौशल में अनेक समस्याएँ आति है। उनको ध्वनियों की पहचान सिखाना ही पर्याप्त नहीं है बल्कि पहचानने के साथ उच्चारण सिखाना भी आवश्यक है।

प्रस्तुत शोध कार्य 'वर्धा शहर के माध्यमिक स्कूलों में हिंदी भाषा शिक्षण की समस्याएँ(दो कौशल - पठन और लेखन कौशल)' इस शोध का विषय क्षेत्र अत्यंत व्यापक है। कोई भी शोध कार्य अपने आप में संपूर्ण नहीं होता। अंत: संभव है कि, प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध में भी कुछ क्षेत्र छुट गए होंगे इस कारण विषय की व्यापकता को देखते हुए भविष्य शोधार्थियों के लिए इस विषय क्षेत्र में शोध की अपार संभावनाएँ है।

अध्ययन के उद्देश्य -

प्रत्येक शोध का एक निश्चित उद्देश्य होता है, शोध व्दारा किसी नवीन सिद्धांत का प्रतिपादन किया जाता है तथा नवीन तथ्यों की खोज की जाती है अथवा शोध का व्यवहारिक उपयोग प्रस्तुत किया जाता है।

प्रस्तुत शोध निश्चित उद्देश्यों केा सामने रखकर किया गया है, जो निम्नलिखित है-

यह भाषा शिक्षण के कौशलों पर आधारित हैं जिसमें भाषाई कौशलों को लेकर मराठी भाषी विद्यार्थियों में दिखाई देने वाली पठन एवमं लेखन स्तर की समस्या को उजागर करना इस शोध का प्रमुख उद्देश्य है।

शोध समस्या -

किसी भी शोध के लिए समस्या का चयन आवश्यक है- भाषा शिक्षण की प्रकिया में मराठी भाषी विद्यार्थी जब व्दितीय भाषा के रूप में हिंदी भाषा का अध्ययन करते हैं तो उस समय विद्यार्थी को मातृभाषा की आदतों के व्याघात के कारण व्दितीय भाषा शिक्षण में कठनाईयों का सामना करना पडता है।

उन्हें भाषाई कौशल-'पढ़ना' और 'लिखना' कौशल में अनेक बाधाएँ आती हैं। उन्हें अनेक समस्याओं का सामना करना पडता है।

शोध की सीमाएँ

समय सीमा को देखते हुए इस कार्य को केवल वर्धा शहर के 03 विद्यालयों का चयन किया गया और 100 छात्रों को निदर्शन के रूप में लिया गया है। जिनसे पठन और लेखन संबन्धित डाटा सामग्री को संकलित किया गया है।

शोध प्रविधि और प्रतिदर्श विवरण

शोध में प्रविधि की महत्वपूर्ण भूमिका होती हैं क्योंकि प्रविधि के आधार पर ही शोधार्थी वैज्ञानिक पद्धति से निष्कर्ष तक पहुँच पाता है। प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध भाषा शिक्षण के अंतर्गत आता है, जो अनुप्रयुक्त भाषा विज्ञान की शाखा है। प्रस्तावित शोध प्रारूप की शोध प्रविधि में प्रायोगिक एवं विश्लेषणात्मक शोध प्रविधि का

उपयोग किया गया है। यह पूरी प्रक्रीया प्रायोगिक रूप से संपादित की गई है।

शोध कार्य के लिए किसी-न-किसी विधि, प्रविधि या पद्धति की आवश्यकता होती हैं | प्रस्तुत शोध के लिए सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है |

वर्धा शहर के मराठी माध्यम के विद्यालयों में पढ़नेवाले विद्यार्थीयों के हिंदी विषय की पठन और लेखन की समस्याएँ जानने के संदर्भ में मैंने वर्धा शहर के कुछ विद्यालयों का चयन किया जिनमें मैंने लगभग 100 विद्यार्थियों से यह जानने की कोशिश कि, की उनके हिंदी पठन और लेखन कार्य पर क्या समस्याएँ आती है या मातृभाषा मराठी भाषा का प्रभाव हिंदी भाषा पर हो रहा हैं।

चयनित स्कूल - 3

1) स्वावलंबी विद्यालय वर्धा,

2) अंजिठा विद्यालय सिंदी, मेघे, वर्धा,

3) यशवंत विद्यालय वर्धा |

इन स्कुलों का चयन किया गया।

कक्षा - चयनित स्कूलों में पढ़ने वाले सभी छात्र छठी कक्षा है|